Sem-3(MJC)

Q वॉन थ्यूनन का कृषि स्थान सिद्धांत :-

* मुख्य विचार वॉन थ्यूनन के अनुसार :

कृषि का स्थान इस बात पर निर्भर करता है कि कौन-सी फसल कहाँ उगाने पर अधिक लाभ मिलता है। और यह लाभ मुख्यत: निर्भर करता है : बाजार से दूरी, परिवहन लागत, फसल की प्रकृति (नाशवान या टिकाऊ)।

* सिद्धांत की मूल अवधारणाएँ :

वॉन थ्यूनन ने एक आदर्श स्थिति मानी :-
एक एकाकी राज्य, बीच में एक ही केन्द्रीय बाजार, भूमि हर जगह समान उपजाऊ, जलवायु हर जगह समान, परिवहन केवल सड़क मार्ग से, किसान अधिकतम लाभ कमाना चाहता है।

* कृषि के वृत्ताकार क्षेत्र :

वॉन थ्यूनन ने बाजार के चारों ओर चार वृत्ताकार क्षेत्र बताए :

(i) प्रथम वृत : दुग्ध एवं सब्जी कृषि। बाजार के सबसे पास। दूध, सब्जी, फल। जल्दी खराब होने वाली फसलें। परिवहन खर्च अधिक। दूध, सब्जियाँ।

(ii) द्वितीय वृत : वानिकी
ईंधन लकड़ी, भारी वस्तु, अधिक परिवहन लागत, लकड़ी।

vivo Y02
Feb 09, 2026, 08:24

(iii) तृतीय वृत्त : अनाज कृषि
गेहूँ, चावल, मक्का। अपेक्षाकृत टिकाऊ फसलें। अनाज।

(iv) चतुर्थ वृत : पशुपालन
चरागाह।, पशु स्वयं बाजार तक आ सकते है न्यूनतम परिवहन लागत।, पशुपालन.

* कृषि लाभ का सिद्धांत :
→ वॉन थ्यूनन के अनुसार :
लाभ = बाजार मूल्य − उत्पादन लागत − परिवहन लागत
→ जिस फसल का शुद्ध लाभ अधिक होगा, वह बाजार के पास उगाई जाएगी।

* सिद्धांत का महत्व :
कृषि भूगोल की नींव बाजार और कृषि के संबंध को समझाता है, परिवहन लागत के महत्व को दर्शाता है। आधुनिक कृषि योजना में सहायक।

* सिद्धांत की सीमाएँ :
वास्तविक दुनिया में कई बाजार होते है, भूमि की उर्वरता हर जगह समान नहीं आधुनिक परिवहन (रैल, शीत भंडारण) शामिल नहीं।
→ सरकारी नीतियों की अनदेखी तकनीकी प्रगति को नहीं माना।

vivo Y02
Feb 09, 2026, 08:25